प्रथम - बुवाई के ठीक बाद

द्वितीय - 15 दिन के अंतराल में ,

तृतीय - अक्टूबर - नवम्बर

बीजू प्रकंदों के उगाव व प्रकंदो की वृद्धि (अक्टूबर - नवम्बर) के समय भूमि को नम रखना आवश्यक होता है।

निराई - गुड़ाई

2-4 बार निराई - गुड़ाई करने की आवश्यकता होती है। अक्टूबर से नवम्बर के महीने में निराई - गुड़ाई करते समय पौधों के आधार पर मिटटी चढाना आवश्यक होता है फलस्वरूप प्रकंदो का विकास अच्छा होता है।

प्रकंदो की खुदाई -

किस्म के अनुसार हल्दी की फसल खुदाई योग्य 7-9 माह अर्थात फरवरी - मार्च में तैयार हो जाती है। सुरोमा 240 - 245 दिन में तैयार हो जाती है। फसल के पकने पर पत्तियाँ पीली पड़ने व सूखने लग जाती है । पूर्ण विकसित प्रकंदो की खुदाई करते समय इस बात का ध्यान रहे कि प्रकंद कटे या छिले नही । खुदाई के एक हप्ते पहले हल्की सिंचाई कर दे ताकि मिट्टी में नमी बने रहे और प्रकंद आसानी से निकल सके।

नये फसल के लिए बीज प्रकंद -

प्रकंद पुंजो को भूमि से निकालने के बाद, प्रकंदों का पानी से धोकर प्राथमिक (मातृप्रकंद) व द्वितीयक प्रकंद (फिंगर्स) अलग कर लिए जाते है और इन्हे मात्र प्रकंदों को बीज के रूप में संरक्षित कर लिया जाता है ।

उपज - वन औषधीय पद्धति से ताजे प्रकंद 3.2 -3.5 टन / प्रति हेक्टर उपज प्राप्त होती है एवं सूखी हल्दी 20-26 प्रतिशत होती है।

सागौन की छंटाई : सितम्बर माह मे 25 प्रतिशत सागौन की छंटाई कर देने से हल्दी के पौधों व प्रकंदो की अच्छी वृद्धि होती है और उपज में भी वृद्धि पाई गई।

आय व व्यय : आय

1. प्रकंदों के रूप में 3500 x @ 30 = Rs.1.05 लाख
2. सूखी हल्दी = 1000 kg x @ 45 = 45,000/- (25- 30%)

व्यय

प्रतिहेक्टेयर लागत - प्रथम वर्ष में रू25,000/- से 30,000 हेक्टर

द्वितिय वर्ष में 20,000/- हेक्टर -1

सम्पर्क :

डॉ. ननिता बेरी

कृषि वानिकी प्रभाग

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.-आर.एफ.आर.सी., मंडला रोड, जबलपुर - 482 021 म.प्र.

सागौन - हल्दी वन-औषधीय पद्धति

डॉ. ननिता बेरी

एवं

रजत शुभ्र पाल

कृषिवानिकी प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ.-आर.एफ.आर.सी., मण्डला रोड

जबलपुर - 482 021

सागौन हल्दी वन (औषधीय) पद्धति

परिचय : सागौन (टीक) एक बहुउद्देशीय वृक्ष के रूप में जाना जाता है। इसे इमारती लकडी का राजा भी कहते है , क्योकि फर्नीचर उद्योग में इसकी लकड़ी का विभिन्न रूपों में उपयोग किया जाता है। इसके अलावा सागौन की पत्तियों से लाल रंग निकाला जा रहा है जिसका उपयोग हर्बल लिपस्टिक बनाने में किया जा रहा है।

"वन - औषधीय" पद्धति का महत्व :

इस पद्धति के अर्न्तगत औषधीय पौधा कर्कुमा लांगा (हल्दी) को सागौन (टेक्टोना ग्रेंडिस) वृक्ष के साथ अर्न्तवर्तीय खेती की जाती है, चूंकि सागौन वृक्ष की पूर्ण परिपक्व अवधि 30-40 वर्ष है और इतने लम्बे समय तक इन वृक्षों के बीच की खाली जमीन का भरपूर उपयोग उपयुक्त औषधीय फसल उगाकर अतिरिक्त आय भी प्राप्त की जा सकती है।

वन - औषधीय पद्धति के महत्वपूर्ण घटक:

वृक्ष	-	वैज्ञानिक नाम- टेक्टोना ग्रेंडिस (टीक)
कुल (परिवार)	-	वर्बी नेसी
प्राप्ति स्थल	-	मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र
औषधीय फसल	-	कर्कुमा लान्गा एल. (हल्दी / टर्मरिक)
कुल	-	जिन्जीबरेसी
किस्म	-	सुरोमा /रश्मि , 240-245 दिन

मे तैयार होने वाली 3.2 टन से 3.5 टन प्रति हेक्टर औसत उपज एवं सूखी हल्दी 26-28 प्रतिशत प्राप्त होती है ।

खेती की पद्धति :

मृदा : हल्दी की खेती के लिए दोमट मिट्टी जिसमें जैविक अंश प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हो, उत्तम होती है। साथ ही अच्छी जल निकास वाली हो अन्यथा हल्दी की गांठे सड़ जाएगी। जहां पर जल निकास का उचित प्रबंध न हो , वहां हल्दी की गांठे की बुआई मेड़ों पर करनी चाहिए। क्षारिय भूमि या ऊसर भूमि इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती । मृदा में थोड़ी अम्लीयता व पी. एच. 5.5 से 6. 5 के मध्य होना चाहिए।

जलवायु : हल्दी के अधिकतम पैदावार के लिए गर्म व नम जलवायु की आवश्यकता होती है। इसे हल्के छायादार स्थानों में सफलता पूर्वक उगाया जा सकता है । अतः इसे सागौन के साथ सफलतापूर्वक अर्न्तवर्तीय फसल के रूप में लिया गया। जिन क्षेत्रों में औसत वर्षा 225 से 250 सें.मी. होती है उन क्षेत्रों में हल्दी की खेती बिना सिचांई के सफलता पूर्वक की जा सकती है।

भूमि की पूर्व तैयारी :

हल्दी की खेती करने से पहले जमीन को 2-3 बार मई माह में 40-50 से.मी. गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे भूमि नरम व भुरभुरी हो जाए और जड़ भूमि के अंदर अच्छी वृद्धि कर सकें। भूमि की 2 बार जुताई के बाद, गोबर की खाद 25-30 टन हेक्टेयर की दर से खेतों में फैलाकर एक बार फिर से जुताई करके मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए। ध्यान रहें कि खाद अच्छी तरह से सड़ी हुई हो अन्यथा भूमि मे कीट प्रकोप का खतरा बना रहता है। इसी समय बेविस्टीन (फफुंद नाशक) को भी भूमि में अच्छी तरह मिला लेना चाहिए। इस बात की पुष्टि कर लेनी चाहिए कि खेतों में कहीं भी सागौन की बीच की जगह में पानी का भराव न हो। यदि खेतों में पानी रूकता हो तो उसे भी एक छोटी नाली बनाकर पानी के निकास की व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

बीज की मात्रा : बीज की मात्रा प्रंकदो के आकार व बुआई की विधि पर निर्भर करती है। अर्न्तवर्तीय फसल के लिए 8-10 क्विंटल प्रति हेक्टर बीज पर्याप्त होते है।

बुआई का समय : हल्दी की बुआई का समय मानसून व सिंचाई की उपलब्धता पर निर्भर करती है। सामान्यत : जून के तीसरे हते से जूलाई तक बआई के लिए उपयुक्त समय होता है।

बीजोपचार / प्रकन्दोपचार : प्रकंदों को बुआई से पहले शासरस + कार्बेन्डिजम के 3 ग्राम / प्रति किलो कंद सममिश्रण से उपचारित करने के बाद ही बुआई करना लाभप्रद होता है।

बुआई का तरीका	-	हल्दी की बुआई पंक्तिओं या मेड़ों पर की जाती है।
समतल क्यरियों मे	-	30 X 45 cm
मेढों पर	-	30 X 60 cm
30cm पौधे से पौधा दूरी	-	60 cm कतार से कतार दूरी
सिचांई	-	तीन बार